

सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण: एक सामाजिक अध्ययन

मनमोहन कुमार
शोध छात्र
पंजीयन संख्या: 7656 / 2019
स्नातकोत्तर भूगोलविभाग
ति.मां.भा. वि. वि. भागलपुर

डॉ० अनिरुद्ध कुमार
विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय भूगोल विभाग
ति.मां.भा. वि. वि. भागलपुर

सारांश

“सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण: एक सामाजिक अध्ययन” शोध आलेख का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि कैसे सेवा केंद्र (Common Service Centers & CSCs) ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सशक्तिकरण के एक प्रभावी उपकरण के रूप में उभर रहे हैं। भारत के ग्रामीण इलाकों में महिलाओं की स्थिति अक्सर सामाजिक, आर्थिक, और शैक्षिक दृष्टि से कमजोर रहती है। इन केंद्रों के माध्यम से महिलाओं को न केवल सरकारी योजनाओं और सेवाओं का सीधा लाभ मिल रहा है, बल्कि उन्हें डिजिटल शिक्षा और आत्मनिर्भरता की दिशा में भी महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त हो रहे हैं। सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाएँ विभिन्न सरकारी योजनाओं, जैसे राशन कार्ड, पेंशन, और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच पा रही हैं। इसके अलावा, बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं का उपयोग करके महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं, जैसे कि माइक्रो-लोन, बीमा, और स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से। इससे उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है और वे अपने परिवारों के आर्थिक विकास में योगदान दे रही हैं। इसके अलावा, सेवा केंद्रों द्वारा महिलाओं को डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन कार्यों के लिए प्रशिक्षण और अन्य तकनीकी संसाधनों का उपयोग सिखाया जा रहा है, जिससे उनकी डिजिटल साक्षरता में वृद्धि हो रही है। यह सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू है, क्योंकि महिलाओं के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से रोजगार, शिक्षा, और स्वास्थ्य सेवाएँ सुलभ हो रही हैं। हालांकि, सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया में कई चुनौतियाँ भी हैं, जैसे कि डिजिटल साक्षरता की कमी, सामाजिक बाधाएँ, और पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं की भागीदारी को लेकर संकोच। लेकिन, सेवा केंद्रों द्वारा महिलाओं को नेतृत्व के अवसर देने, समाज में निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदार बनाने, और

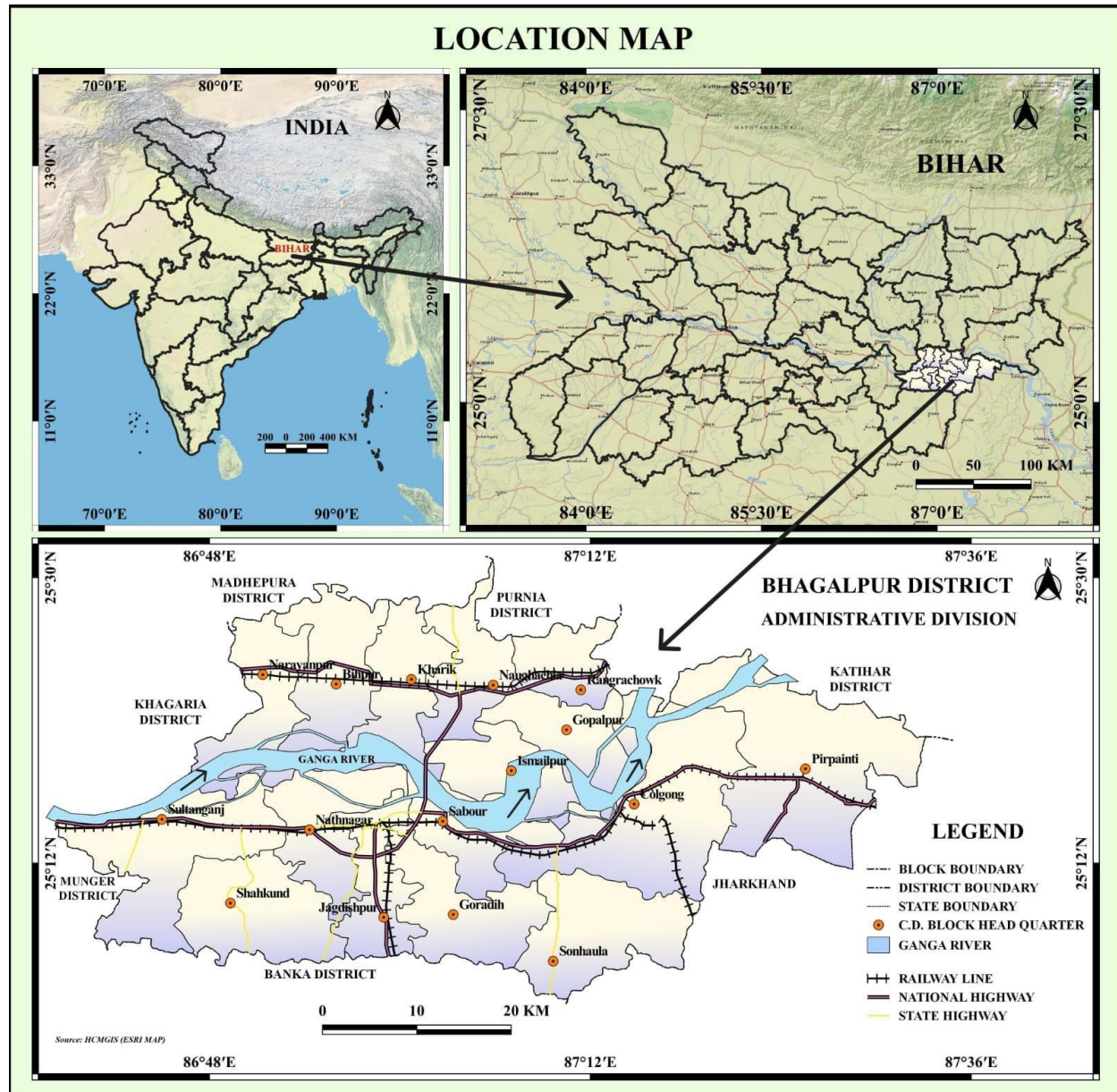
आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के अवसर प्रदान करने से इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है।

मूल शब्द (Key Words):

सेवा केंद्र (Common Service Centers & CSC), महिलाओं का सशक्तिकरण, डिजिटल साक्षरता, आर्थिक सशक्तिकरण, स्वयं सहायता समूह (SHG), बैंकिंग सेवाएँ, सरकारी योजनाएँ, पेंशन योजनाएँ, स्वास्थ्य सेवाएँ, सामाजिक बाधाएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम, वित्तीय समावेशन, ऑनलाइन सेवाएँ, समाज में नेतृत्व, तकनीकी संसाधन।

अध्ययन क्षेत्र

भागलपुर जिला बिहार राज्य के दक्षिण-पूर्वी हिस्से में स्थित है। इस जिले के मध्य से होकर पवित्र गंगा नदी प्रवाहित होती है। इसका अक्षांशीय विस्तार $25^{\circ}07'$ उत्तर से $25^{\circ}30'$ उत्तर तक और देशांतर $86^{\circ}37'$ पूर्व से $87^{\circ}30'$ पूर्व तक है। भागलपुर का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2569 वर्ग किलोमीटर है, जो बिहार के कुल क्षेत्रफल का लगभग 2.73% है। इस जिले में कुल 1515 गांव बसे हुए हैं और इसकी औसत ऊंचाई समुद्र तल से लगभग 43 मीटर है। भागलपुर में औसत वार्षिक वर्षा 1203 मिमी होती है। जिले की कुल जनसंख्या 30,03,776 है, और स्त्री-पुरुष अनुपात 880 महिलाएं प्रति 1000 पुरुष है। यहां की जनसंख्या वृद्धि दर दशकीय आधार पर 25.36% है। भागलपुर जिले की सीमाएं इस प्रकार हैं। उत्तर: मधेपुरा, पूर्णिया, और कटिहार दक्षिण: बांका पूर्व: गोड्डा और साहिबगंज पश्चिम: खगड़िया और मुंगेर इस जिले में तीन अनुमंडल हैं: भागलपुर सदर, नवगछिया, और कहलगांव। साथ ही, जिले में कुल 16 प्रखंड शामिल हैं। भागलपुर अपनी भौगोलिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक विविधता के कारण अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। इसके प्राकृतिक संसाधन और सामाजिक संरचना इसे क्षेत्रीय विकास और नियोजन के संदर्भ में विशिष्ट बनाते हैं।



साहित्य समीक्षा :

सेवा केंद्रों और डिजिटल समावेशन पर आधारित समकालीन साहित्य भारत में ई-शासन की दिशा में हो रहे परिवर्तनों और इसकी सामाजिक प्रभावशीलता को रेखांकित करता है। अंजलि गुप्ता (2019) का शोधपत्र "सेवा केंद्र और डिजिटल समावेशन" ग्रामीण भारत में डिजिटल पहुँच के विस्तार में सेवा केंद्रों की भूमिका का विश्लेषण करता है। यह लेख दर्शाता है कि सेवा केंद्र डिजिटल खाई को पाटने में महत्वपूर्ण साधन बन चुके हैं। नेशनल ई-गवर्नेंस

डिवीजन (2021) की रिपोर्ट “Common Services Centres : A Step towards Inclusive Governance” डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत सेवा केंद्रों की संरचना, कार्यप्रणाली और समावेशी शासन में उनकी भूमिका को गहराई से प्रस्तुत करती है। इसी क्रम में, एस. बैनर्जी (2016) की पुस्तक “भारत में सुशासन के उपकरण” में सेवा केंद्रों को सुशासन के एक प्रभावशाली उपकरण के रूप में चिन्हित किया गया है, जिससे नागरिकों को सुविधाजनक व पारदर्शी सेवाएँ मिलती हैं। हिंदुस्तान (2023) में प्रकाशित लेख “सेवा केंद्रों से ग्रामीण भारत में बदलाव” ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा केंद्रों द्वारा लाए गए सामाजिक और आर्थिक बदलावों को उजागर करता है। इसी विषय कोडमपजल (2020) की वार्षिक रिपोर्ट ने संख्यात्मक तथ्यों के साथ प्रमाणित किया है, जिससे उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन संभव होता है। टाइम्स ऑफ इंडिया (2023) में छपा लेख “CSCs Empowering Women Entrepreneurs in Villages” महिलाओं की भागीदारी और सशक्तिकरण में सेवा केंद्रों की भूमिका को रेखांकित करता है। अंत में, प्रियंका चौधरी (2022) का लेख “डिजिटल सेवा और सामाजिक परिवर्तन” डिजिटल सेवाओं द्वारा हो रहे सामाजिक बदलावों की समालोचना करता है।

सामूहिक रूप से ये ग्रंथ डिजिटल भारत के अंतर्गत सेवा केंद्रों के माध्यम से हो रहे प्रशासनिक नवाचार, सामाजिक समावेशन और सशक्तिकरण को प्रमाणित करते हैं।

शोध आलेख का उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया को समझना और मूल्यांकन करना है। अध्ययन का प्रयास यह जानना है कि किस प्रकार सेवा केंद्रों ने महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और डिजिटल सहभागिता को बढ़ावा दिया है। इसका एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी है कि सेवा केंद्रों द्वारा महिलाओं को सूचना, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, सरकारी योजनाओं तथा स्वरोजगार के अवसरों तक पहुँच प्रदान कर उनके आत्मनिर्भरता के स्तर को कैसे सुदृढ़ किया गया है। इस प्रकार, शोध का समग्र उद्देश्य सेवा

केंद्रों के माध्यम से महिलाओं के बहुआयामी सशक्तिकरण की वास्तविक स्थिति का आकलन करना तथा भविष्य में इन केंद्रों की प्रभावशीलता को और अधिक बढ़ाने के उपाय सुझाना है।

डेटाबेस एवं कार्यप्रणाली

इस शोध अध्ययन में गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) दोनों पद्धतियों का प्रयोग किया गया है, ताकि सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया का गहन और व्यापक विश्लेषण किया जा सके। अध्ययन के लिए आवश्यक आँकड़े दो प्रकार से एकत्र किए गए हैं : प्राथमिक स्रोतों और द्वितीयक स्रोतों से। प्राथमिक डेटा का संग्रह सेवा केंद्रों का उपयोग करने वाली महिलाओं से प्रत्यक्ष साक्षात्कार तथा समूह चर्चा (Focus Group Discussion) के माध्यम से किया गया। इसके तहत महिलाओं के अनुभव, उनकी सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तन, आर्थिक स्वावलंबन के स्तर और डिजिटल साक्षरता में वृद्धि के पहलुओं को समझने का प्रयास किया गया। इसके साथ ही सेवा केंद्र संचालकों (VLEs) से भी साक्षात्कार लेकर महिलाओं की सहभागिता संबंधी जानकारी प्राप्त की गई। द्वितीयक डेटा के लिए विभिन्न सरकारी रिपोर्टें जैसे डिजिटल इंडिया मिशन, CSC&SPV की वार्षिक रिपोर्ट, महिला सशक्तिकरण पर आधारित शोध पत्रों, पुस्तकों तथा विश्वसनीय वेबसाइटों से आंकड़े और जानकारी संकलित की गई। इस प्रकार, यह शोध एक व्यवस्थित कार्यप्रणाली के माध्यम से सेवा केंद्रों द्वारा महिलाओं के जीवन में आए सकारात्मक परिवर्तनों तथा चुनौतियों दोनों का संतुलित अध्ययन प्रस्तुत करता है।

प्रस्तावना

भारत में महिलाओं का सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक क्षेत्रों में सुधार को सुनिश्चित करती है। भारतीय ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ अक्सर सामाजिक और आर्थिक असमानताओं का सामना करती हैं, जिनमें सीमित शैक्षिक अवसर, आर्थिक निर्भरता, और पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँ प्रमुख हैं। ऐसे में, डिजिटल इंडिया और ई-गवर्नेंस जैसे पहलुओं ने ग्रामीण महिलाओं के लिए नए अवसरों का

मार्ग प्रशस्त किया है, और सेवा केंद्र (Common Service Centers & CSC) इस दिशा में एक महत्वपूर्ण साधन साबित हो रहे हैं। सेवा केंद्रों का उद्देश्य ग्रामीण भारत में सरकारी सेवाओं की पहुँच बढ़ाना है, जिससे नागरिकों को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं, जैसे राशन कार्ड, पेंशन योजनाओं, स्वास्थ्य सेवाओं, और अन्य सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे उनके गाँव तक मिल सके। इन केंद्रों के माध्यम से, महिलाओं को कई लाभ मिल रहे हैं, जिनमें विशेष रूप से वित्तीय समावेशन, डिजिटल साक्षरता, और सामाजिक सुरक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में सेवा केंद्रों की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को अपने अधिकारों और अवसरों के बारे में जागरूक करते हैं। इसके साथ ही, महिलाएँ इन केंद्रों के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं, माइक्रो-लोन, बीमा योजनाओं, और डिजिटल शिक्षा का लाभ प्राप्त कर रही हैं, जो उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में मदद कर रही हैं। सेवा केंद्रों में महिलाओं को न केवल सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है, बल्कि वे डिजिटल साक्षरता और ऑनलाइन सेवाओं का उपयोग करके अपने जीवन को अधिक सुलभ और बेहतर बना रही हैं। इसके अलावा, सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाएँ समाज में अपनी भूमिका को बेहतर ढंग से समझने और अपनी आवाज को सशक्त बनाने में सक्षम हो रही हैं। यह सशक्तिकरण उन्हें न केवल आर्थिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक और मानसिक रूप से भी मजबूत बना रहा है।

इस शोध का उद्देश्य यह समझना है कि सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया को कैसे आकार दिया जा रहा है, और इस प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियाँ और अवसर क्या हैं। इस अध्ययन में सेवा केंद्रों के प्रभाव, महिलाओं के अनुभव, और उनके जीवन में आए बदलावों का गहन विश्लेषण किया जाएगा।

सेवा केंद्रों का परिचय

सेवा केंद्र किसी क्षेत्र विशेष में स्थित ऐसा विकास केंद्र होता है, जो न केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, बल्कि आसपास के क्षेत्रों से भी क्रियात्मक संबंध बनाए रखता है। इसकी उत्पत्ति आमतौर पर एक बस्ती के रूप में होती है, जो समय के साथ सेवा

केंद्र का रूप ले लेती है।¹ इसका विकास भौतिक, सांस्कृतिक विशेषताओं और ऐतिहासिक कालक्रम पर निर्भर करता है। सेवा केंद्रों का अध्ययन स्वतंत्र और तुलनात्मक दोनों दृष्टिकोणों से किया जाता है। सेवा केंद्र का उद्देश्य आसपास के क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना होता है। इसका आकार एक छोटे ग्राम से लेकर बड़े महानगर तक हो सकता है। सेवा केंद्र की प्रकृति और फैलाव इसकी सेवा एवं आर्थिक गतिविधियों पर निर्भर करता है।² ग्रामीण सेवा केंद्रों में विरल जनसंख्या, कृषि व पशुपालन जैसे प्राथमिक कार्य प्रमुख होते हैं, जबकि शहरी सेवा केंद्रों में घनी जनसंख्या और द्वितीयक से पंचम स्तर की सेवाएं व आर्थिक क्रियाएं प्रमुख होती हैं। शहरी सेवा केंद्रों का प्रभाव क्षेत्र अधिक विस्तृत और व्यापक होता है।

इसी क्रम में, सेवा केंद्र (CSC) भारत सरकार द्वारा स्थापित एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण भारत में सरकारी सेवाओं की पहुँच को सरल, सुलभ और प्रभावी बनाना है। ये केंद्र डिजिटल इंडिया और ई-गवर्नेंस के तहत काम करते हैं और ग्रामीण नागरिकों को सरकारी योजनाओं, सेवाओं और जानकारी का लाभ घर के पास ही प्रदान करते हैं। CSCs का संचालन मुख्य रूप से निजी क्षेत्र के उद्यमियों द्वारा किया जाता है, जिन्हें Village Level Entrepreneurs (VLEs) के नाम से जाना जाता है। इन केंद्रों का कार्यक्षेत्र ग्रामीण इलाकों में होता है, जहां डिजिटल और प्रशासनिक सेवाओं का वितरण अन्य स्थानों से कठिन होता है। सेवा केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण इलाकों में सरकार की योजनाओं, स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा, बैंकिंग, पेंशन, और अन्य महत्वपूर्ण सेवाओं का लाभ नागरिकों तक पहुँचाया जाता है।³ इसके अलावा, ये केंद्र डिजिटल साक्षरता और ई-गवर्नेंस से जुड़ी सेवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए प्रशिक्षण और सहायता प्रदान करते हैं।

सेवा केंद्रों का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण भारत में डिजिटल सेवाओं और सरकारी योजनाओं की पहुँच को आसान बनाना है। इससे न केवल नागरिकों के जीवन में सुधार हो रहा है, बल्कि यह ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए भी एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। विशेष रूप से, सेवा केंद्रों ने महिलाओं को कई प्रकार की सरकारी योजनाओं, जैसे राशन कार्ड,

पेंशन योजनाएँ, और महिला सुरक्षा योजनाओं का लाभ उठाने का अवसर दिया है। महिलाओं के लिए सेवा केंद्रों की भूमिका में मुख्य योगदान डिजिटल साक्षरता का है। सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाएँ न केवल ऑनलाइन सेवाओं का उपयोग करना सीख रही हैं, बल्कि वे विभिन्न सरकारी योजनाओं के लिए आवेदन भी कर रही हैं।⁴ इससे महिलाओं को न केवल सरकारी योजनाओं के लाभ प्राप्त हो रहे हैं, बल्कि उन्हें आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भी सशक्त बनाया जा रहा है। इसके अलावा, सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाएँ वित्तीय सेवाओं का लाभ भी प्राप्त कर रही हैं, जैसे माइक्रो-लोन, बैंक खातों का उद्घाटन, और बीमा योजनाएँ, जो उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने में मदद कर रही हैं। इसके साथ ही, सेवा केंद्रों द्वारा महिलाओं को रोजगार के अवसर और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी प्रदान किए जा रहे हैं, जिससे वे अपने परिवारों की आय में योगदान करने में सक्षम हो रही हैं।

महिलाओं के लिए सेवा केंद्रों की महत्ता

भारत में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति ऐतिहासिक रूप से चुनौतीपूर्ण रही है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में। ग्रामीण महिलाएँ अक्सर पारंपरिक और रूढ़िवादी सामाजिक संरचनाओं के कारण अपने अधिकारों और अवसरों से वंचित रहती हैं। समाज में उन्हें घरेलू कार्यों और पारिवारिक जिम्मेदारियों तक सीमित रखा जाता है, जिससे उनकी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता प्रभावित होती है। इसके साथ ही, महिलाएँ अक्सर शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के अवसरों से भी वंचित रहती हैं। आर्थिक दृष्टि से, महिलाएँ पुरुषों के मुकाबले कम वेतन पर काम करती हैं और अक्सर परिवार की आय में असमान योगदान देती हैं।⁵ इसी तरह, शैक्षिक दृष्टिकोण से भी कई ग्रामीण महिलाएँ शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम नहीं होतीं, जिसके कारण उनका सामाजिक और आर्थिक उन्नति की दिशा में कदम रखना मुश्किल होता है। इस संदर्भ में, सेवा केंद्रों (Common Service Centers & CSCs) का निर्माण और संचालन ग्रामीण महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर साबित हो रहा है। ये केंद्र न केवल सरकारी योजनाओं और सेवाओं तक पहुँच प्रदान कर रहे हैं, बल्कि महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने का कार्य भी कर रहे हैं।

सेवा केंद्रों द्वारा महिलाओं के लिए उपलब्ध विभिन्न सेवाएँ

सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं को कई महत्वपूर्ण सेवाओं का लाभ मिल रहा है, जो उनकी जीवनशैली में सुधार और सशक्तिकरण में मदद कर रहे हैं। इनमें प्रमुख सेवाएँ निम्नलिखित हैं:

1. राशन कार्ड और पेंशन सेवाएँ

सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाएँ राशन कार्ड, पेंशन योजनाओं (जैसे वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन) के लिए आवेदन कर सकती हैं। पहले, इन सेवाओं का लाभ उठाने के लिए महिलाओं को अधिकारियों से मिलने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी, लेकिन अब सेवा केंद्रों के माध्यम से यह प्रक्रिया सरल और त्वरित हो गई है। इससे विशेष रूप से वृद्ध और असहाय महिलाओं को अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मदद मिल रही है।

2. स्वास्थ्य सेवाएँ

स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सेवा केंद्रों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के लिए आसान हो गई है। सेवा केंद्रों में स्वास्थ्य योजनाओं की जानकारी और आवेदन की सुविधा उपलब्ध है, और यहां महिलाएँ मातृत्व देखभाल, स्वच्छता, टीकाकरण और अन्य स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, टेली-मेडिसिन और ई-हेल्थ सेवाओं की मदद से महिलाएँ दूरदराज के क्षेत्रों में भी चिकित्सा सहायता प्राप्त कर रही हैं।

3. बैंकिंग सेवाएँ और वित्तीय समावेशन

सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाएँ बैंक खाता खोलने, माइक्रो-लोन और बीमा योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकती हैं। इसके जरिए महिलाएँ वित्तीय स्वतंत्रता की ओर कदम बढ़ा रही हैं। विशेष रूप से, ग्रामीण महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से छोटे-छोटे कर्ज प्राप्त कर व्यापार शुरू कर रही हैं, जिससे उनका आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है।

4. शैक्षिक और डिजिटल साक्षरता

सेवा केंद्रों में महिलाओं को डिजिटल साक्षरता प्रदान करने के कार्यक्रम चलाए जाते हैं। महिलाएँ ऑनलाइन पाठ्यक्रम, सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी, और अन्य शिक्षा-संबंधी सेवाओं का लाभ प्राप्त कर रही हैं। इसके अलावा, सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाएँ विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्राप्त कर सकती हैं, जो उन्हें रोजगार और व्यवसाय के अवसर प्रदान करते हैं।

5. कृषि और अन्य क्षेत्रीय सेवाएँ

सेवा केंद्रों में महिलाएँ कृषि संबंधित योजनाओं, कृषि बीमा, मौसम पूर्वानुमान, और बाजार दरों की जानकारी भी प्राप्त कर सकती हैं। इससे महिलाएँ अपने कृषि कार्यों को अधिक सटीक और लाभकारी बना रही हैं।

इस प्रकार, सेवा केंद्र महिलाओं के लिए एक बहुपरतीय मंच के रूप में कार्य कर रहे हैं, जो उन्हें सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य सेवाओं, वित्तीय सहायता और डिजिटल साक्षरता के लाभ प्रदान कर रहा है। ये केंद्र महिलाओं को सशक्त बनाने के साथ-साथ उनके जीवन में बदलाव लाने का एक सशक्त माध्यम बन गए हैं।

महिलाओं की डिजिटल साक्षरता में वृद्धि

सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं को डिजिटल उपकरणों का उपयोग सिखाना

आज के डिजिटल युग में, तकनीकी साक्षरता एक महत्वपूर्ण कौशल बन गई है, जिसे हर व्यक्ति के पास होना चाहिए, खासकर महिलाओं के लिए। डिजिटल इंडिया के तहत, सेवा केंद्रों (Common Service Centers & CSCs) ने ग्रामीण महिलाओं के लिए डिजिटल उपकरणों का उपयोग सीखने के अवसर प्रदान किए हैं, जो उनके जीवन को सशक्त बनाने के साथ-साथ समाज में उनकी भूमिका को भी महत्वपूर्ण बनाता है।⁶ सेवा केंद्रों के माध्यम से, महिलाएँ कंप्यूटर, स्मार्टफोन, टैबलेट जैसे डिजिटल उपकरणों का उपयोग करना सीख रही हैं, जिससे वे सरकारी सेवाओं और अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का लाभ उठा सकती हैं। इन केंद्रों में महिलाओं को डिजिटल उपकरणों का उपयोग सिखाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है,

जिसमें वे कंप्यूटर पर डेटा दर्ज करना, इंटरनेट ब्राउजिंग, ऑनलाइन फॉर्म भरना, डिजिटल भुगतान करना और सोशल मीडिया का उपयोग करना सीखती हैं। यह प्रशिक्षण न केवल उन्हें तकनीकी दृष्टि से सशक्त बनाता है, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों और सरकारी योजनाओं के बारे में भी जागरूक करता है। उदाहरण स्वरूप, वे आसानी से राशन कार्ड, पेंशन, स्वास्थ्य सेवाओं, और अन्य सरकारी योजनाओं के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकती हैं, जो पहले केवल उनके लिए एक सपने जैसा था।⁷ इसके अलावा, डिजिटल उपकरणों के माध्यम से महिलाएँ अपने बच्चों की शिक्षा में भी सहायता कर सकती हैं, विभिन्न शैक्षिक ऐप्स का उपयोग करके अपनी पढ़ाई को बेहतर बना सकती हैं और उन्हें दूसरों को शिक्षा देने का अवसर भी प्राप्त होता है। इसके साथ ही, वे अपने सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए नए अवसरों का सामना कर सकती हैं, जैसे ऑनलाइन व्यवसाय शुरू करना, डिजिटल विपणन (marketing) करना, या घर बैठे काम करने की संभावनाओं का लाभ उठाना।

डिजिटल शिक्षा और साक्षरता कार्यक्रमों का महत्व आज के समय में अत्यधिक बढ़ गया है, खासकर महिलाओं के लिए, जो पारंपरिक और औपचारिक शिक्षा तक सीमित थीं। सेवा केंद्रों द्वारा आयोजित डिजिटल शिक्षा कार्यक्रमों ने महिलाओं के जीवन में एक सकारात्मक बदलाव लाया है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाएँ न केवल इंटरनेट और कंप्यूटर का उपयोग करना सीख रही हैं, बल्कि उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य, कृषि, और वित्तीय सेवाओं के बारे में जानकारी भी मिल रही है। सेवा केंद्रों में महिलाओं के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो उन्हें ऑनलाइन कार्यों जैसे कि ई-मेल भेजना, सरकारी पोर्टल पर लॉगिन करना, ऑनलाइन दस्तावेज डाउनलोड करना और सोशल मीडिया पर सुरक्षित तरीके से जानकारी साझा करना सिखाते हैं। इससे महिलाओं को अपनी पहचान बनाने और अपनी आवाज को प्रभावी तरीके से व्यक्त करने का अवसर मिलता है। इन कार्यक्रमों से महिलाएँ डिजिटल प्लेटफॉर्मों के जरिए व्यवसाय भी चला सकती हैं, जैसे कि ई-कॉमर्स वेब साइट्स, ऑनलाइन मार्केटिंग, और फ्रीलांसिंग के माध्यम से अपनी आय अर्जित कर सकती हैं। इसके अलावा, वे घर बैठे रोजगार के अवसरों का लाभ उठा सकती हैं, जैसे डेटा एंट्री, कंटेंट राइटिंग, और ग्राहक सेवा जैसे क्षेत्रों में। साथ ही, सेवा केंद्रों द्वारा डिजिटल शिक्षा से

जुड़ी ट्रेनिंग महिलाएँ न केवल अपने व्यक्तिगत जीवन में सुधार ला रही हैं, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी अपनी पहचान बना रही हैं। वे अब डिजिटल प्लेटफॉर्म पर महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम हैं, चाहे वह व्यक्तिगत वित्त के प्रबंधन से संबंधित हो, या अपने परिवार के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, और अन्य सरकारी योजनाओं तक पहुँच प्राप्त करने से संबंधित हो।

आर्थिक सशक्तिकरण

बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं का उपयोग (स्वयं सहायता समूह, माइक्रो-लोन, बीमा योजनाएँ)

आर्थिक सशक्तिकरण के संदर्भ में, सेवा केंद्रों (Common Service Centers & CSCs) ने ग्रामीण महिलाओं को बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं की ओर मार्गदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ आमतौर पर वित्तीय संस्थानों तक पहुँच बनाने में कठिनाइयाँ महसूस करती हैं, लेकिन सेवा केंद्रों के माध्यम से उन्हें अब विभिन्न वित्तीय सेवाओं का लाभ आसानी से मिल रहा है। स्वयं सहायता समूहों (Self Help Groups & SHGs)

का गठन और कार्यान्वयन सेवा केंद्रों के द्वारा किया गया है, जो महिलाओं को एकजुट करने और उन्हें आर्थिक गतिविधियों में शामिल करने का महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है।⁸ इन समूहों के माध्यम से महिलाएँ छोटी-छोटी बचत योजनाएँ बनाती हैं और एक दूसरे से वित्तीय सहायता प्राप्त करती हैं। इसके अलावा, इन समूहों को माइक्रो-लोन प्राप्त करने में भी मदद मिलती है, जिसे वे छोटे व्यवसायों की शुरुआत करने या अपने घरेलू आय के स्रोतों को बढ़ाने के लिए उपयोग करती हैं। सेवा केंद्रों के जरिए, महिलाएँ बैंकों से माइक्रो-लोन लेने में सक्षम हो रही हैं, जो उन्हें छोटे व्यवसाय, कृषि उत्पादन, हस्तशिल्प, या अन्य आय-संवर्धन गतिविधियों के लिए धन प्रदान करता है। इसी तरह, सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाएँ बीमा योजनाओं का लाभ भी उठा रही हैं, जैसे जीवन बीमा, स्वास्थ्य बीमा, और दुर्घटना बीमा। ये योजनाएँ उन्हें और उनके परिवार को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती हैं। बीमा योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को आपातकालीन स्थितियों में सहायता प्रदान करना और उन्हें मानसिक शांति देना है। इसके अलावा, स्वास्थ्य और जीवन बीमा जैसी योजनाएँ महिलाओं को जीवन में

अनिश्चितताओं का सामना करने के लिए तैयार करती हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास और स्वतंत्रता बढ़ता है।

सेवा केंद्रों में Village Level Entrepreneurs (VLEs) के रूप में महिलाओं का सक्रिय रूप से शामिल होना एक महत्वपूर्ण पहल है, जो उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बना रहा है। VLEs वे व्यक्ति होते हैं, जो सेवा केंद्रों का संचालन करते हैं और ग्रामीण समुदाय को विभिन्न सेवाएँ प्रदान करते हैं। VLEs के रूप में महिलाएँ अब न केवल खुद को सशक्त बना रही हैं, बल्कि वे दूसरों को भी विभिन्न सेवाओं का लाभ पहुँचाकर अपने आर्थिक भविष्य को मजबूत कर रही हैं। कई महिलाओं ने सेवा केंद्रों के माध्यम से अपनी खुद की उद्यमिता यात्रा शुरू की है।⁹ वे अब VLEs के रूप में स्वयं सेवा केंद्रों का संचालन करती हैं, जहाँ वे विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान करती हैं, पेंशन आवेदन प्रक्रिया में मदद करती हैं, और बैंकिंग सेवाएँ उपलब्ध कराती हैं। इसके अलावा, वे डिजिटल सेवाओं के प्रचारक के रूप में भी काम कर रही हैं, जैसे कि ई-गवर्नेंस सेवाएँ, ऑनलाइन आवेदन, और डिजिटल शिक्षा। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है, बल्कि वे अपने समुदाय में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। उदाहरण स्वरूप, कई महिलाएँ सेवा केंद्रों के माध्यम से कृषि उत्पादों की बिक्री, हस्तशिल्प, सिलाई, और अन्य कुटीर उद्योगों का संचालन कर रही हैं। ये महिलाएँ अब अपने स्थानीय बाजारों में अपने उत्पादों को बेचने के लिए ऑनलाइन मंचों का उपयोग कर रही हैं, जिससे उन्हें अधिक ग्राहक और बेहतर आय प्राप्त हो रही है। इसके साथ ही, सेवा केंद्रों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, वे अब अपने गाँव और आसपास के क्षेत्रों में डिजिटल विपणन और उत्पाद प्रचार के लिए भी काम कर रही हैं।

इस प्रकार, सेवा केंद्रों से जुड़े व्यवसायों के माध्यम से महिलाएँ अब आत्मनिर्भर बन रही हैं और अपने परिवार की आय बढ़ाने के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से सशक्त हो रही हैं। उन्हें न केवल अपने अधिकारों का ज्ञान हो रहा है, बल्कि वे अब आर्थिक गतिविधियों में अपनी सक्रिय भागीदारी से समाज में एक सकारात्मक बदलाव ला रही हैं।

इससे उनकी सामाजिक स्थिति में भी सुधार हुआ है, और वे परिवारों और समाज में नेतृत्व का उदाहरण पेश कर रही हैं।

स्वास्थ्य और पोषण सेवाओं में सुधार

स्वास्थ्य योजनाओं, टेली-मेडिसिन सेवाओं और मातृत्व देखभाल के लिए सेवा केंद्रों का योगदान

ग्रामीण भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण संबंधी समस्याएँ गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं, जहाँ स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सीमित और दुरुह होती है। इन समस्याओं को हल करने के लिए, सेवा केंद्रों (Common Service Centers & CSCs) ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सेवा केंद्रों के माध्यम से, महिलाओं को विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं का लाभ मिल रहा है, जो उनके जीवन स्तर में सुधार करने में मदद कर रहे हैं। सेवा केंद्रों द्वारा उपलब्ध टेली-मेडिसिन सेवाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में दूरदराज इलाकों में रह रही महिलाओं के लिए एक आशा की किरण बनकर उभरी हैं। इन सेवाओं के माध्यम से महिलाएँ अपने स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान विशेषज्ञ डॉक्टरों से प्राप्त कर सकती हैं, बिना किसी लंबी दूरी तय किए। टेली-मेडिसिन के जरिए वे स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान और इलाज के लिए डॉक्टरों से सीधे संपर्क कर सकती हैं, जिससे उन्हें इलाज में विलंब नहीं होता और समय की भी बचत होती है।¹⁰ मातृत्व देखभाल भी सेवा केंद्रों के जरिए ग्रामीण महिलाओं के लिए अधिक सुलभ हुई है। सेवा केंद्रों में महिलाओं को गर्भावस्था, प्रसव, और नवजात शिशु की देखभाल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। इसके अलावा, महिलाएँ प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर देखभाल सेवाओं का लाभ भी उठा सकती हैं, जैसे कि रक्त परीक्षण, अल्ट्रासाउंड, टीकाकरण, और अन्य स्वास्थ्य जांच। इस प्रकार, मातृत्व स्वास्थ्य के क्षेत्र में सेवा केंद्रों ने महिलाओं के लिए आवश्यक सेवाओं की पहुँच को आसान और सस्ता बना दिया है।

सेवा केंद्रों ने महिलाओं को स्वास्थ्य और पोषण से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं तक पहुँच प्रदान की है। उदाहरण स्वरूप, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY), जो गर्भवती महिलाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करती है, सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं को

इसका लाभ मिल रहा है। इसी तरह, अन्य स्वास्थ्य योजनाएँ जैसे आयुष्मान भारत योजना, जो स्वास्थ्य बीमा प्रदान करती है, और राष्ट्रीय पोषण मिशन, जो महिलाओं और बच्चों के लिए पोषण संबंधी सेवाएँ प्रदान करता है, सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं तक पहुँच रही है। इसके अलावा, महिलाएँ सेवा केंद्रों के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्राप्त कर रही हैं, जैसे कि स्वास्थ्य जांच, टीकाकरण, और पोषण संबंधी सलाह। इस जानकारी से महिलाएँ न केवल अपनी सेहत का ध्यान रख सकती हैं, बल्कि वे अपने परिवार के स्वास्थ्य को भी बेहतर बना सकती हैं। सेवा केंद्रों द्वारा महिलाओं के लिए विभिन्न पोषण योजनाओं का प्रचार-प्रसार भी किया जा रहा है, जैसे कि आयरन, कैल्शियम और विटामिन सप्लीमेंट्स, जो गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिए बेहद आवश्यक होते हैं। इन योजनाओं के जरिए महिलाएँ अपनी पोषण संबंधी समस्याओं का समाधान कर सकती हैं और उनके स्वास्थ्य को बेहतर बना सकती हैं।

इस प्रकार, सेवा केंद्रों के माध्यम से स्वास्थ्य और पोषण सेवाओं में सुधार हुआ है, जो महिलाओं को बेहतर स्वास्थ्य और जीवनशैली प्रदान कर रहे हैं। यह न केवल उनकी व्यक्तिगत स्थिति में सुधार कर रहा है, बल्कि पूरे समुदाय के स्वास्थ्य और विकास को भी प्रभावित कर रहा है।

केस स्टडी और उदाहरण

बिहार का भागलपुर जिला, जो एक ग्रामीण क्षेत्र है, महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में सेवा केंद्रों (Common Service Centers & CSCs) के प्रभावी उपयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस क्षेत्र में सेवा केंद्रों द्वारा महिलाओं को नई संभावनाएँ और अवसर प्रदान किए गए हैं, जिनसे उनका जीवन स्तर बेहतर हुआ है और उन्होंने अपने समुदाय में सकारात्मक बदलाव लाए हैं। भागलपुर जिले में कई महिला Village Level Entrepreneurs (VLEs) ने सेवा केंद्रों का संचालन किया है। VLEs वह महिलाएँ हैं जो अपने गाँव में सेवा केंद्रों का संचालन करती हैं और स्थानीय समुदाय को विभिन्न सरकारी सेवाओं का लाभ पहुंचाती हैं। भागलपुर में, महिलाओं ने अपनी डिजिटल साक्षरता को बढ़ाकर

और सेवाओं की पहुँच को सरल बनाकर, न केवल अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार किया, बल्कि उन्होंने समाज में महिलाओं की भूमिका को भी सशक्त किया। इन महिला VLEs ने अपने गाँव में सेवा केंद्रों के माध्यम से विभिन्न सरकारी योजनाओं का प्रचार-प्रसार किया और गाँववासियों को इन योजनाओं के बारे में जानकारी दी। जैसे, प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना, राशन कार्ड बनवाना, पेंशन योजनाओं का लाभ दिलाना, आदि। इन सेवाओं के माध्यम से महिलाएँ न केवल अपने परिवार के लिए सुविधाएँ प्राप्त कर रही थीं, बल्कि पूरे गाँव में सकारात्मक बदलाव लाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थीं।

भागलपुर में महिला VLEs ने सिर्फ अपने आर्थिक सशक्तिकरण तक ही सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने समाज में भी महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। इन महिला VLEs ने ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के अधिकारों और उनके सशक्तिकरण के बारे में जागरूकता फैलाई। इससे महिलाओं की स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। उदाहरण के तौर पर, कई महिला VLEs ने अपने समुदाय में महिलाओं को पंचायत चुनावों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप अधिक महिलाएँ पंचायत सदस्य बनीं और समुदाय के विकास में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके अतिरिक्त, इन महिलाओं ने समाज में सशक्तिकरण के लिए आवाज उठाई, जैसे कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा, बाल विवाह और शिक्षा की कम दर के खिलाफ। महिलाओं के लिए कार्यस्थलों और सार्वजनिक जीवन में सुरक्षित माहौल सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने कार्यशालाओं और जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया। ये महिलाएँ अब केवल अपने परिवारों की नहीं, बल्कि पूरे समुदाय की स्थिति में बदलाव लाने में सहायक बनीं।¹¹

भागलपुर में सेवा केंद्रों का संचालन करने वाली महिलाओं ने यह साबित किया है कि यदि महिलाओं को उचित संसाधन और अवसर मिलें, तो वे न केवल अपनी स्थिति में सुधार कर सकती हैं, बल्कि समाज में भी सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं। यहाँ की महिला VLEs ने डिजिटल साक्षरता, वित्तीय स्वतंत्रता, और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्रों में अपनी सफलता का मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होंने यह भी दिखाया है कि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए

सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बाधाओं को पार करने की आवश्यकता है, और इसके लिए सरकारी योजनाओं और सेवाओं का सटीक उपयोग किया जा सकता है।

भागलपुर जिले का यह उदाहरण यह साबित करता है कि सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण संभव है। महिलाओं द्वारा सेवा केंद्रों के संचालन ने न केवल उनकी व्यक्तिगत स्थिति में सुधार किया है, बल्कि समाज में भी व्यापक बदलाव लाए हैं। इस प्रकार, सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण ग्रामीण क्षेत्रों में एक प्रभावी और स्थायी परिवर्तन का माध्यम बन सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

सेवा केंद्रों (Common Service Centers & CSCs) ने ग्रामीण भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। यह न केवल महिलाओं को सरकारी और गैर-सरकारी सेवाओं की सहज पहुँच प्रदान करता है, बल्कि उन्हें डिजिटल युग से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक सिद्ध हुआ है। विशेष रूप से वे महिलाएँ जो पहले सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी रूप से वंचित थीं, अब सेवा केंद्रों के माध्यम से नई संभावनाओं और अवसरों तक पहुँच रही हैं। अध्ययन के दौरान यह स्पष्ट हुआ कि सेवा केंद्रों ने महिलाओं को डिजिटल साक्षरता, वित्तीय समावेशन, स्वास्थ्य देखभाल, शैक्षणिक सेवाओं और सामाजिक जागरूकता जैसे विविध क्षेत्रों में सशक्त किया है। महिलाएँ अब न केवल सेवाओं की उपभोक्ता हैं, बल्कि वे स्वयं VLEs (Village Level Entrepreneur) बनकर इन केंद्रों का संचालन भी कर रही हैं। इससे उनके आत्म-विश्वास, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक प्रतिष्ठा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। सेवा केंद्रों के माध्यम से महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों, माइक्रो-लोन, बीमा योजनाओं और डिजिटल ट्रेनिंग जैसे संसाधन प्राप्त हुए हैं, जिससे वे छोटे व्यापार शुरू कर सकी हैं और घरेलू आय में योगदान देने लगी हैं। इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवाओं और टेली-मेडिसिन के जरिए महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता और देखभाल में भी सुधार आया है। हालांकि, कुछ चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं, जैसे डिजिटल जागरूकता की कमी, तकनीकी संसाधनों की सीमाएँ, और सामाजिक रूढ़ियाँ।

लेकिन इन बाधाओं को योजनाबद्ध ढंग से हल किया जाए तो सेवा केंद्र महिलाओं के लिए सशक्तिकरण का एक सशक्त माध्यम बन सकते हैं।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सेवा केंद्रों ने महिलाओं को केवल सेवाओं तक पहुँच ही नहीं दी है, बल्कि उन्हें अपने जीवन की दिशा बदलने का भी अवसर दिया है। यह एक ऐसा सामाजिक नवाचार है, जो आने वाले समय में ग्रामीण भारत की महिलाओं के जीवन को और अधिक सशक्त, आत्मनिर्भर और सम्मानजनक बनाने की क्षमता रखता है। यदि सरकार, प्रशासन और समाज मिलकर सेवा केंद्रों के नेटवर्क को और अधिक सशक्त बनाएँ, तो यह पहल भारत के समावेशी और न्यायपूर्ण विकास में मील का पत्थर सिद्ध होगी।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, अंजलि (2019), "सेवा केंद्र और डिजिटल समावेशन", इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 54, अंक 35, च-34
2. National e-Governance Division (NeGD), Digital India Programme (2021), Common Services Centres: A Step towards Inclusive Governance.
3. बैनर्जी, एस. (2016), भारत में सुशासन के उपकरण, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, P-138
4. वही
5. हिंदुस्तान (2023), "सेवा केंद्रों से ग्रामीण भारत में बदलाव", 22 नवंबर।, P-4
6. Ministry of Electronics and Information Technology (MeitY), Government of India (2020), Annual Report on Common Service Centres (CSCs)।
7. Times of India (2023), "CSCs Empowering Women Entrepreneurs in Villages", 18 अगस्त।, P-6
8. वही
9. चौधरी, प्रियंका (2022), "डिजिटल सेवा और सामाजिक परिवर्तन", समकालीन

प्रशासनिक समीक्षा, जुलाई-सितंबर अंक I, P-24

10. Indian Express (2022), "How Common Service Centres are Transforming Rural Governance", 12 दिसंबर, P-8

11. स्वयं द्वारा एकत्रित आंकड़े